This tract was given free to the person who handed it to you. It is free to you too. Never pay for it.
यह पर्चा आपको देने वाले व्यक्ति को मुफ्त मिला था। यह आपके लिए भी मुफ्त है। इसके लिए कभी पैसे न दें।

Read it. Study it with your Bible. Then pass it on to someone else.
इसे पढ़ें। अपनी बाइबल के साथ इसका अध्ययन करें। फिर इसे किसी और को दे दें।

Scan to read more, hear it in your language, or ask a question:
purposeandvision.org
और पढ़ने, अपनी भाषा में सुनने, या सवाल पूछने के लिए स्कैन करें:

We'd love to hear what you think. Scan the code to send us a note.
हमें आपकी राय सुनना अच्छा लगेगा। कोड स्कैन करके हमें संदेश भेजें।

A gift from the churches of Christ.
मसीह की कलीसियाओं की ओर से एक उपहार।

Not for sale.
बिक्री के लिए नहीं।

मैं उद्धार कैसे पा सकता हूँ?
How Can I Be Saved?

फिलिप्पी नगर में एक जेलर ने एक बार पौलुस और सीलास से यही सवाल पूछा था:

“हे सज्जनो, उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूँ?” (प्रेरितों के काम 16:30)

यह सबसे ज़रूरी सवाल है जो आप कभी पूछेंगे।

बहुत से लोगों को सिखाया गया है कि उद्धार कमाना पड़ता है। काफ़ी अच्छे काम करो। काफ़ी कर्तव्य निभाओ। जीवन में (और शायद कई जन्मों में) ऊपर चढ़ते जाओ। किसी दिन, शायद, आप चोटी पर पहुँचकर उद्धार पा लेंगे।

पर आपको कैसे पता चलेगा कि आपने काफ़ी कर लिया है? पता नहीं चलेगा। यह ऐसी सीढ़ी है जिसकी कोई चोटी नहीं। तो बाइबल क्या सिखाती है?

Some refuse the gift because it hurts their pride. It says you cannot save yourself. That is not an insult. That is good news!

Conclusion:

The cross is the payment. Faith that obeys is the open hand.

Will you keep climbing a ladder with no top? Or will you receive God's gift?

Will you believe, repent, confess Jesus, and be baptized into Christ? (Acts 2:37-38)

Then work for Him because you are grateful, not because you fear the future.

कुछ लोग इस उपहार को ठुकरा देते हैं, क्योंकि इससे उनके घमण्ड को चोट लगती है। यह कहता है कि आप अपने आप को नहीं बचा सकते। यह अपमान नहीं है। यह शुभ समाचार है!

आखिरी बात:

क्रूस कीमत है। आज्ञा माननेवाला विश्वास खुला हाथ है।

क्या आप बिना चोटी की सीढ़ी पर चढ़ते ही रहेंगे? या आप परमेश्वर का उपहार ग्रहण करेंगे?

क्या आप विश्वास करेंगे, मन फिराएँगे, यीशु का अंगीकार करेंगे, और मसीह में बपतिस्मा लेंगे? (प्रेरितों के काम 2:37-38)

फिर उनके लिए काम कीजिए, इसलिए कि आप आभारी हैं, इसलिए नहीं कि आप भविष्य से डरते हैं।

A jailer in the city of Philippi once asked Paul and Silas this very question:

"Sirs, what must I do to be saved?" (Acts 16:30)

It is the most important question you will ever ask.

Many people have been taught that salvation must be earned. Do enough good works. Keep enough duties. Climb higher through life (and maybe even many births). Someday, perhaps, you will reach the top and be saved.

But how do you know when you have done enough? You don't. It is a ladder with no top. So, what does the Bible teach?

उद्धार एक उपहार है। अगर आपको इसे कमाना पड़े, तो वह मज़दूरी है। उपहार कमाया नहीं जाता। बाइबल कहती है:

“क्योंकि अनुग्रह ही से विश्वास के द्वारा तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, यह परमेश्वर का दान है— न तुम्हारे अच्छे कामों के कारण, ताकि कोई घमण्ड न करे।” (इफिसियों 2:8-9)

अच्छे काम इसे खरीद नहीं सकते। बेशक आपको भलाई करनी चाहिए। पर अगर अच्छे काम क्षमा खरीद सकते, तो मसीह का मरना व्यर्थ होता (गलातियों 2:21)। परमेश्वर ने हमारा उद्धार किया, “धार्मिकता के उन कामों के कारण नहीं जो हमने किए, पर अपनी दया के अनुसार।” (तीतुस 3:5)

न कठोर तपस्या, न बहुत से जन्म इसे खरीद सकते हैं। वही पुराना दोष लिए हुए नया शरीर उद्धार नहीं है। वह बस एक लंबा कर्ज़ है।

Repent. Turn from sin and from idols. God "commands all men every where to repent." (Acts 17:30)

Confess Jesus before others. "With the mouth confession is made unto salvation." (Romans 10:10)

Be baptized into Christ. "He who believes and is baptized shall be saved." (Mark 16:16)

None of these steps pay anything to God. They receive what He has given. Jesus is "the author of eternal salvation to all those who obey him." (Hebrews 5:9)

And when God saves you, He teaches you to live a new life. Good works follow salvation. They do not buy it (Ephesians 2:10).

मन फिराइए। पाप और मूर्तियों से मुड़ जाइए। परमेश्वर “हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देते हैं।” (प्रेरितों के काम 17:30)

दूसरों के सामने यीशु का अंगीकार कीजिए। “मुँह से अंगीकार किया जाता है, जिससे उद्धार होता है।” (रोमियों 10:10)

मसीह में बपतिस्मा (पानी में डुबकी) लीजिए। “जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले, उसी का उद्धार होगा।” (मरकुस 16:16)

इनमें से कोई भी कदम परमेश्वर को कुछ नहीं चुकाता। ये कदम बस वह ग्रहण करते हैं जो उन्होंने दिया है। यीशु “उन सब के लिए जो उसकी आज्ञा मानते हैं, अनन्त उद्धार का कारण” है। (इब्रानियों 5:9)

और जब परमेश्वर आपका उद्धार करते हैं, तो वे आपको नया जीवन जीना सिखाते हैं। अच्छे काम उद्धार के बाद आते हैं। वे उसे खरीदते नहीं (इफिसियों 2:10)।

Salvation is a gift. If you must earn it, it is wages. A gift is not earned. The Bible says:

"For you are saved by grace through faith; and it is not of yourselves: it is the gift of God— not of your worthy actions, lest any man should boast." (Ephesians 2:8-9)

Good works cannot buy it. Of course you should do good. But if good works could buy pardon, Christ died for nothing (Galatians 2:21). God saved us "not by righteous works which we have done, but according to his mercy." (Titus 3:5)

Neither harsh penance, nor many births can buy it. A new body with the same old guilt is not salvation. It is only a longer debt.

सब एक ही रास्ते से आते हैं। अमीर और गरीब। विद्वान और मज़दूर। ऊँचे और नीचे। कोई घमण्ड नहीं कर सकता (1 कुरिन्थियों 1:26-31)।

पर उपहार के साथ भी शर्तें हो सकती हैं। मान लीजिए एक राजा क्षमा-पत्र मेज़ पर रखकर कहता है, “आओ और इसे ले लो।” आना क्षमा को खरीदता नहीं। वह बस उसे ग्रहण करता है जिस पर राजा पहले ही हस्ताक्षर कर चुका है।

इसी तरह, परमेश्वर ने शर्तें रखी हैं जिन्हें हमें मानना है:

विश्वास कीजिए कि यीशु ही मसीह, परमेश्वर का पुत्र है (यूहन्ना 20:31)।

Everyone comes the same way. The rich man and the poor man. The scholar and the laborer. The high and the low. No one may boast (1 Corinthians 1:26-31).

But a gift can still have terms. Suppose a king lays a pardon on the table and says, "Come and take it." Coming does not buy the pardon. It receives what the king has already signed.

Likewise, God has set the terms which we must accept:

Believe that Jesus is the Christ, the Son of God (John 20:31).